विचार बिन्दु

अपराधी के दंड में उपयोगिता होनी चाहिए। –वाल्टेयर

नौकरी और प्रवेश परीक्षाओं में आमूल चूल परिवर्तन करना ही होगा

एन टी ए द्वारा आयोजित नीट परीक्षा में जिस बड़े पैमाने पर धांधली, पेपर लीक और भ्रष्टाचार होने की घटनाएँ सामने आई हैं, उसके आधार पर पूरी परीक्षा को ही एक 'स्कैम' कहा जा सकता है। एन टी ए ने पेपर लीक की आशंका के कारण 'यू जी सी- नेट', 'सी एस आइ आर - नेट' 'नीट - पी जी' की परीक्षाएँ भी स्थगित/रद्द कर दी हैं। इसके अलावा विभिन्न विभागों, लोक सेवा आयोगों और सरकारों द्वारा आयोजित अनेक भर्ती परीक्षाएँ भी पेपर लीक के कारण निरस्त की गईं हैं। कुल मिलाकर पूरी परीक्षा प्रणाली ही इतनी दोष पूर्ण हो गई है कि लाखों, करोड़ों युवाओं का भविष्य ही दांव पर लग गया है। ऐसी परिस्थिति में यह आवश्यक हो गया है कि पूरे देश में विभिन्न सरकारी नौकरियों के लिए और विभिन्न उच्च/ तकनीकी शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश के लिए होने वाली परीक्षाओं की मूल अवधारणा पर पुनर्विचार किया जाए एवं आवश्यक हो तो उसमें आमूल चूल परिवर्तन करके नई व्यवस्था को स्थापित किया जाए। यदि सरकारी सेवाओं में लोग भ्रष्टाचार की सीढ़ी पर चढ़कर आएंगे एवं इंजीनियरिंग और मेडिकल की परीक्षाओं में छात्र केवल ऐसी परीक्षाओं के आधार पर प्रवेश पाएंगे तो फिर देश में किस प्रकार के अधिकारी, डॉक्टर और इंजीनियर होंगे, इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है।

इस आलेख में हम इस पर चर्चा करेंगे कि पूरी भर्ती प्रक्रिया का आयोजन किस प्रकार से होना चाहिए ताकि श्रेष्ठ और सर्वाधिक उपयुक्त व्यक्ति चयनित हो सकें। आज हम विभिन्न परीक्षाओं के माध्यम से केवल अभ्यर्थियों के स्मरण शक्ति की परीक्षा लेते हैं कि वह कितनी जानकारी को अपने दिमाग में ठूँस सकता है और परीक्षा के 3 घंटे में उनमें से कितनी उगल सकता है। इसी आधार पर यह तय हो जाता है कि कौन किसी महत्वपूर्ण सरकारी पद पर बैठने लायक है, कोई व्यक्ति डॉक्टर बनकर के चिकित्सा के क्षेत्र में जाने लायक है अथवा इंजीनियर बनकर सड़कों, भवनों या पुलों का निर्माण करने योग्य है?

प्रथम आवश्यकता यह है कि प्रत्येक प्रकार की सेवाओं के लिए यह तय किया जाए कि उस सेवा में अधिकारी अथवा कर्मचारियों में किस प्रकार के गुण, योग्यता और कौशल की आवश्यकता है? कोई व्यक्ति यदि गणित के सवाल बहुत अच्छे कर लेता है या राजनीति शास्त्र या संस्कृत आदि-आदि विषयों में पारंगत है या रट करके इतिहास के तथ्य और तिथियां परीक्षा में लिख सकता है या देश-दुनिया के भूगोल के बारे में अच्छी जानकारी रखता है तो इस आधार पर वह कैसे राजकीय सेवा के लिए उपयुक्त घोषित हो जाता है? अभी तो हम यह मानकर चल रहे हैं कि परीक्षाएँ पूरी ईमानदारी और पारदर्शिता से आयोजित हो रही हैं। केवल कुछ विषयों की जानकारी को रट कर अधिक अच्छे अंक प्राप्त करके वह किसी सेवा में प्रवेश कर लेता है तो यह एक प्रकार से विडंबना ही होगी। यही एक कारण है, जिससे हमारी नौकरशाही की एवं विभिन्न सरकारी सेवाओं की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है।

सरकार में पद के महत्त्व और कार्य के अनुसार अधिकारियों/ कर्मचारियों के लिए आवश्यक कौशल और व्यक्तिगत गुणों को निर्धारित किया जा सकता है। फिलहाल यदि हम चयन में भ्रष्टाचार की बात छोड़ भी दें तो विभिन्न परीक्षाओं के लिए जिस प्रकार के कोचिंग इंस्टिट्यूट बन गए हैं, और जिस तरह से विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए तैयार किया जा सकता है, उससे कभी भी अभ्यर्थी का मूल चरित्र एवं उसकी क्षमता का पता लगना लगभग असंभव है।

किसी सरकारी पद पर नियुक्त व्यक्ति में कुछ गुण और दक्षता अत्यावश्यक हैं जैसे– संवेदनशीलता, ईमानदारी, समस्या के जड़ में जाने की क्षमता, विश्लेषण की क्षमता, लिखित और मौखिक संप्रेषण की क्षमता, अपनी बात को समझाने का कौशल, अपने विचार को स्पष्ट और सटीक रूप से लिखकर प्रस्तुत करने की क्षमता, विकट परिस्थितियों में अपना संतुलन बनाए रखने की क्षमता, टीम के सदस्य के रूप में काम करने की क्षमता, समय पालन की आदत, नेतृत्व की क्षमता, उपलब्धियों का श्रेय अपने साथियों को देने की इच्छा, कमजोर एवं वंचित लोगों के प्रति अधिक संवेदनशीलता, महिलाओं को प्रति सम्मान की भावना, निशक्तजनों के प्रति आदर, समाज में बदलाव लाने की उत्कट इच्छा, जनप्रतिनिधियों के साथ संतुलन बनाते हुए भी अपनी रीढ की हड्डी को सीधे रखते हुए सही बात सामने रखने का साहस, नम्रता पूर्वक व्यवहार करते हुए भी गलत काम करने से इनकार करने का साहस, जाति, वर्ग, विशेष से ऊपर उठकर निर्णय लेने की दक्षता और क्षमता, सरलता और सादगी पूर्ण व्यवहार, आडंबर पूर्ण व्यवहार और अहंकार रहित जीवन जीने की इच्छा, भ्रष्टाचार के प्रति असहनशीलता, अनुचित माध्यम से धन प्राप्ति की अनिच्छा, अन्य के भ्रष्टाचार में सहायक न बनने की हिम्मत, राजनीति से प्रभावित हुए बिना अपने कार्य को जनहित में करते रहने की प्रबल आकांक्षा।

पद के महत्त्व और कार्य के अनुसार उपरोक्त सूची में कुछ घटाये-बढ़ाए जा सकते हैं। सबसे पहले यह भी तय करने की आवश्यकता है कि क्या राजनीतिक नेतृत्व को उपरोक्त लिखित गुणों के आधार पर चयनित व्यक्ति उन्हें प्रशासन में चाहिए अथवा नहीं? स्वाभाविक है, कोई भी नेता, किसी भी राजनीतिक दल का हो, उपरोक्त का विरोध नहीं कर पाएगा। एक बार यह निश्चित हो जाए कि किस प्रकार के वांछित गुण अच्छे राजकीय कर्मचारी या अधिकारी में होने चाहिए, तो फिर अगला प्रश्न यह उठाता है कि ऐसे गुणों से युक्त व्यक्तियों की पहचान किस प्रकार की जाए ताकि इसके लिए किसी भी अभ्यर्थी का पुराना रिकार्ड और पृष्ठभूमि को देखा जा सकता है।

कई प्रकार के मनोवैज्ञानिक विधियां हैँ जिनकी सहायता ली जा सकती है। उसे विभिन्न प्रकार की स्थितियों में रखकर उसका विश्लेषण करने हेतु कहा जा सकता है।

उपरोक्त लिखित विभिन्न प्रकार के गुणों की पहचान करना सम्भव है। कोई व्यक्ति भ्रष्टाचार करता है तो उसका

हमारी चयन की सारी प्रणाली इतनी अधिक दोषपूर्ण हो चुकी है कि इस पर एक बार पुनर्विचार अत्यंत आवश्यक है। विदेशी विश्वविद्यालयों, बिट्स, पिलानी जैसे अनेक स्थानों में प्रवेश हेतु ऑनलाइन परीक्षा होती है जिसमें बैठने के लिए विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार तिथि और समय चुन सकता है। प्रश्नपत्र स्वयं डाउनलोड करता है। ऐसी परीक्षा प्रणाली में पेपर लीक की संभावना स्वतः समाप्त हो जाती है। एन टी ए आदि संस्थाएँ इनसे कोई सीख क्यों नहीं लेतीं?

नुकसान एक बार होता है लेकिन गलत व्यक्ति का चयन उससे भी बडा अपराध है क्योंकि गलत रूप से राजकीय सेवा में आया व्यक्ति अगले 30-35 साल तक जन हित के विरुद्ध कार्य करेगा। भारतीय सेना में भर्ती की प्रक्रिया 4-5 दिन चलती है। उसके माध्यम से सेना के अधिकारी में किस प्रकार के गुण चाहियें, उसका आकलन बहुत बडी सीमा तक सही हो पाता है। इससे सीख लेकर अन्य सेवाओं में भर्ती की प्रक्रिया निर्धारित की जा सकती है।

इस प्रकार की बढ़ती प्रक्रिया में कोई भी कोचिंग कुछ काम की नहीं रहेगी और सभी कोचिंग संस्थान महत्वहीन हो जाएंगे इसके फल स्वरुप कोई अभ्यार्थी ग्रामीण निर्धन परिवार का है अथवा शहर के सम्राट परिवार का है, दोनों के चयन के समान अवसर रहेंगे। वर्तमान समय में जो परिवार कोचिंग का बहुत अधिक भार नहीं वहन कर पाता वह एक प्रकार से प्रतियोगिता से बाहर ही हो जाता है।

किसी व्यक्ति को किसी भी विषय विशेष की जानकारी का सम्बंध उसके काम से नहीं हो तो उसे चयन का आधार बनाने से कोई लाभ नहीं है। हमने यह कई बार देखा है कि कई परीक्षाओं में टॉप करने वाले विद्यार्थी नितांत असफल प्रशासक सिद्ध होते हैं।

तकनीकी और उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश परीक्षाओं में भी पूर्ण बदलाव की आवश्यकता है। लाखों विद्यार्थीयों में से कुछ हज़ारों का चयन केवल 3 घंटे के मल्टीपल चोइस क्वेश्चन (एम सी क्यू) प्रश्नपत्र के आधार पर न केवल नितांत अनुचित है, यह तरीका गरीब छात्रों के चयन की संभावना ही समाप्त कर देता है, क्योंकि इसमें सफलता वही प्राप्त कर सकते हैं जो लाखों रुपये कोचिंग पर खर्च कर सकें। इस रकम का इंतजाम करने में गरीब घरों के खेत और माँ के गहने तक रखने पड़ जाते हैं। भर्ती परीक्षा में विषय की जानकारी के साथ अच्छे शिक्षक, डॉक्टर, इंजिनीयर के लिए आवश्यक चारित्रिक गुणों की पहचान करने का भी प्रयास होना चाहिए।

इन परीक्षाओं में सफल होने के लिए और अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए कोचिंग संस्थानों द्वारा इस प्रकार का माहौल बना दिया गया है कि बिना कोचिंग किए हुए इनमें सफल होना संभव ही नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि न केवल हम गलत चयन करेंगे अपितु शिक्षण संस्थानों सेवाओं में ग्रामीण, निर्धन परिवारों के या साधारण विद्यालय से पढ़ने वाले विद्यार्थियो के चयन के मार्ग लगभग बंद कर देंगे। यही कारण है कि हम राजकीय सेवाओं की गुणवत्ता को बिल्कुल नहीं बनाए रख पा रहे हैं। एक समय था जब सरकारी विद्यालय से निकले हुए छात्र बड़ी संख्या में सरकार के विभिन्न विभागों में भर्ती हो जाते थे, क्योंकि तब कोचिंग माफिया विकसित नहीं हुआ था। यदि हम देश को अच्छी प्रशासनिक व्यवस्था प्रदान करना चाहते हैं तो उसके लिए हमें पूरी चयन पद्धति को ही उपरोक्त अनुसार बदलना होगा।

लगभग इसी प्रकार की स्थिति उच्च शिक्षण संस्थान और अच्छे तकनीकी संस्थानों में प्रवेश के लिए है। शायद ही कोई ऐसा विद्यार्थी होगा जो किसी न किसी कोचिंग संस्थान में कोचिंग लिए बिना आईआईटी या किसी तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छे संस्थान में प्रवेश हेतु परीक्षा में सफल हो सके। यही स्थिति मेडिकल कॉलेज में प्रवेश पाने के लिए प्रवेश परीक्षा नीट की बन चुकी है। इस प्रकार की व्यवस्था के कारण आजकल सामान्य विद्यालयों और महाविद्यालय की पढ़ाई महत्वहीन हो कर रह गई है। विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की गैर शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर से वंचित कर दिया गया है। जब 10-20 लाख विद्यार्थी किसी 3 घंटे की परीक्षा में बैठकर अपनी पात्रता इंजीनियरिंग महाविद्यालय अथवा मेडिकल विद्यालय में प्रवेश हेतु सिद्ध करेंगे तो इसमें बेईमानी एवं भ्रष्टाचार होना अवश्यंभावी है। यह भी उल्लेखनीय है कि सरकारी मेडिकल कॉलेज में वार्षिक फीस लगभग 10000 रुपए महीने है, वहीं निजी मेडिकल कॉलेज के लिए यही लगभग 20 लाख रुपये है। फीस में इतना अधिक अंतर होने के कारण ही कोई भी व्यक्ति जैसे-तैसे जुगाड़ करके 10-20 लाख रुपए किसी भी दलाल के माध्यम से देकर परीक्षा में अच्छी रैंक सुनिश्चित करना चाहता है, ताकि वह सरकारी कॉलेज में प्रवेश ले सके।

जो विद्यार्थी एक-सवा करोड़ देकर एमबीबीएस की परीक्षा पास करेगा और फिर बाद में दो -ढाई करोड़ व्यय करके एमडी, एमएस की परीक्षा पास करेगा, तो वह भला क्यों सरकारी नौकरी करके गरीबों की सेवा करने की सोचेगा? उसका पहला काम तो यही होगा कि वह पढ़ाई पूरी करते ही, सबसे पहले पढ़ाई पर खर्च किया गया पूरा पैसा सूद समेत मरीजों से वसूल करे। इस सबकी भरपाई गरीबों से ही तो होनी है। हमारी मेडिकल शिक्षा व्यवस्था, एक तरह से 'अमीरों की, अमीरों के द्वारा, अमीरों के लिए' बन कर रह गई है। क्या हम ऐसा ही समाज चाहते हैं जिसमें 10 प्रतिशत देशवासी सारी सुविधाओं का भोग करें और शेष न्यूनतम मूलभूत सुविधाएं प्राप्त करने से भी वंचित रहें?

हमारी चयन की सारी प्रणाली इतनी अधिक दोषपूर्ण हो चुकी है कि इस पर एक बार पुनर्विचार अत्यंत आवश्यक है। विदेशी विश्वविद्यालयों, बिट्स, पिलानी जैसे अनेक स्थानों में प्रवेश हेतु ऑनलाइन परीक्षा होती है जिसमें बैठने के लिए विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार तिथि और समय चुन सकता है। प्रश्नपत्र स्वयं डाउनलोड करता है। ऐसी परीक्षा प्रणाली में पेपर लीक की संभावना स्वतः समाप्त हो जाती है। एन टी ए आदि संस्थाएँ इनसे कोई सीख क्यों नहीं लेतीं?

क्या सरकार अपनी हर स्तर की सेवा में संवेदनशील, ईमानदार, विश्लेषण करने की क्षमता रखने वाले अधिकारी वास्तव में चाहती है या नहीं? देश में विशेषज्ञों की कमी नहीं है। बस, आवश्यकता केवल इस तथ्य को स्वीकार करने की है कि हमें विभिन्न स्तरों पर चयन की वर्तमान प्रक्रिया को बिल्कुल बदलने की आवश्यकता है, ताकि किसी भी व्यक्ति के गुण एवं कौशल का मिलान संबंधित पद के लिए वांछित गुणों से हो सके। ऐसा होने पर ही अभ्यर्थी अपनी पसंद के अनुसार जीवन को बना सकेंगे और उसका पूरा लाभ भी समाज को मिल सकेगा।

यह सब चयन प्रक्रिया में आमूल चूल परिवर्तन के बिना सम्भव नहीं है। बस, केवल दृढ़ इच्छा शक्ति चाहिए क्योंकि हजारों करोड़ का कोचिंग माफिया इसका भारी विरोध करेगा। क्या नीति निर्धारकों में ऐसी इच्छा शक्ति है? इसका उत्तर तो भविष्य के गर्भ में है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

आपातकाल कालखंड का काला अध्याय

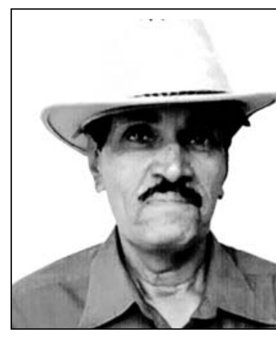

मिश्रीलाल पंवार

राजस्थान सरकार द्वारा मंगलवार, 25 जून को लोकतंत्र सेनानियों का राज्य स्तरीय सम्मान समारोह आयोजन किया रहा है। यह समारोह मुख्यमंत्री निवास, 8, सिविल लाइन्स, जयपुर में आयोजित किया जाएगा। इस समारोह को लेकर प्रदेश के लोकतंत्र सेनानियों में भारी उत्साह छाया हुआ है। पूरे राजस्थान के लोकतंत्र सेनानी बड़ी संख्या में समारोह में भाग लेने जयपुर पहुंचेंगे।

25 जून 1975 से 21 मार्च 1977 तक का 21 महीने की अवधि में भारत आपातकाल की पीड़ा को झेला था। तत्कालीन राष्ट्रपति फ़ख़रुद्दीन अली अहमद ने तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के कहने पर भारतीय संविधान की अनुच्छेद 352 के अधीन आपातकाल की घोषणा कर दी। स्वतंत्र भारत के इतिहास में यह सबसे विवादास्पद और अलोकतांत्रिक काल था। देश में आंतरिक गड़बड़ी की आशंका का बहाना बना कर आपातकाल घोषित करने का देश में ज़ोरदार विरोध हुआ था। इस दौरान नागरिकों के मौलिक अधिकारों पर प्रतिबंध के साथ-साथ प्रेस पर भी सेंसरशिप लगा दी गई थी। इस घटना को भारत में लोकतंत्र के इतिहास के सबसे काले दिनों में से एक माना जाता है। भारत में राष्ट्रीय आपातकाल 3 बार घोषित किया गया है – 1962 (चीन युद्ध), 1971 (पाकिस्तान युद्ध) और 1975 (आंतरिक अशांति)। राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा तब की जा सकती है जब उन्हें आंतरिक और बाहरी स्त्रोतों से या संकट की वित्तीय स्थितियों से राष्ट्र को खतरा महसूस होता है। मगर तीसरा आपात काल तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हठधर्मिता की परिणति के कारण लगाया गया था। इस कालखंड में श्रीमती इंदिरा गांधी के अधिकांश राजनीतिक विरोधियों को जेल में डाल दिया गया था और प्रेस को सेंसर कर दिया गया था।

दरअसल राजनारायण ने 1971 में रायबरेली लोकसभा क्षेत्र से इंदिरा गांधी के हाथों शिकस्त झेलने के बाद इलाहाबाद हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। 12 जून 1975 को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इंदिरा गांधी को लोकसभा चुनाव में जीत दर्ज करने के लिए गलत तौर-तरीके अपनाने का दोषी पाया और उनका चुनाव 6 साल के लिए रद्द कर दिया। हालांकि, इंदिरा गांधी ने हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील दायर की। शीर्ष अदालत ने 24 जून 1975 को हाईकोर्ट के आदेश को तो बरकरार रखा, लेकिन उन्हें प्रधानमंत्री पद पर बने रहने की इजाजत दे दी। इन्दिरा गांधी के कहने पर राष्ट्रपति ने दूसरे ही दिन इमरजेंसी लागू कर दी। इससे देश के जनमानस का आक्रोश उमड़ पड़ा। सरकार के फैसले का विरोध करने वालों को गिरफ्तार कर लिया गया था। बताया जाता है कि उस दौरान करीब 1 लाख लोगों को गिरफ्तार किया गया था। इस दौरान देश अशांति की आग में झुलसता रहा।

करीब दो साल इंदिरा गांधी अपने विरोधियों को कुचलने में लगी रही। मगर विरोध की लहर तेज होती रही। आखिर एक दिन लोकसभा को भंग कर नए सिरे से चुनाव कराने की सिफारिश कर दी। हालांकि, यह फैसला उनकी पार्टी और उनके लिए घातक साबित हुआ। खुद इंदिरा को रायबरेली संसदीय क्षेत्र से हार का सामना करना पड़ा।

जनता पार्टी पूर्ण बहुमत के साथ केंद्र की सत्ता में आई और मोरारजी देसाई देश के प्रधानमंत्री बने। वहीं, संसद में कांग्रेस सदस्यों की संख्या 50 से घटकर 153 हो गई। भारतीय राजनीति का यह महत्वपूर्ण समय था, क्योंकि 30 साल बाद देश में कोई गैर कांग्रेसी सरकार बनी थी। जो लोग इमरजेंसी के दौरान जेलों में ठूंस दिए गए, वहीं क्रान्तिकारी बाद में लोकतंत्र सेनानियों के रुप में पहचाने जाने लगे। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने अपने शासनकाल में लोकतंत्र सेनानियों के लिए मासिक पैंशन देने की शुरुआत की थी। गत कांग्रेस सरकार के सत्ता में आते ही मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बदले की भावना से इनकी पैंशन बन्द कर दी। इस बार पुनः भाजपा की सरकार बनी तो मुख्यमंत्री भजनलाल ने लोकतंत्र सेनानियों की पैंशन शुरू करने का कार्य सबसे पहले किया।

गौरतलब है कि लोकतंत्र सेनानियों के संगठनों द्वारा हर वर्ष 25 जून को काला दिवस मनाया जाता है। इस बार यह समारोह मुख्यमंत्री के आवास पर मनाया जा रहा है। इसमें प्रदेश भर के लोकतंत्र सैनानियों को आमंत्रित किया गया है। इस अवसर पर प्रमुख लोगों को सम्मानित भी किया जाएगा।

लोकतंत्र रक्षा मंच के प्रांतीय महामंत्री देवराज बोहरा ने बताया कि आपातकाल के लगते ही लोगों पर ज़ुल्म होने शुरू हो गए। इससे जोधपुर भी अछूता नहीं रहा। मेरे पिताजी हीराचंद बोहरा भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे। इसलिए मेरे पिता हीराचंद बोहरा को पुलिस मीसा में गिरफ्तार करने घर पहुंची लेकिन नाकाम रही। उस समय मेरे पास भारतीय जनसंघ युवा मोर्चा के प्रदेश का दायित्व था। इसलिए पुलिस से बचने के लिए मुझे भी घर से गायब होना पड़ा। इससे बाद पुलिस ने घरवालों को परेशान करना शुरू कर दिया। पुलिस ने तलाशी के बहाने परिवार के लोगों को प्रताडित करने लगे। उसी दौरान मेरे भाईयों को पुखराज व निर्मल को घसीटते हुए पुलिस थाने ले गई ओर उन्हे 15 दिनो तक प्रताडित किया। उनसे एक ही सवाल पूछा जाता कि आंदोलन से जुड़े पत्रक साइक्लोस्टाइल कहां होते है और तुम्हारे पिता और भाई इस वक्त कहां है। हम गुपचुप आन्दोलन कर लोगों को जागरूक करने में लगे रहे। आखिर एक दिन कटलाबाजार में देशभक्ति के नारे लगाने पर गिरफ्तार कर मारपीट के बाद सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया। पिताजी के भूमिगत होने के कारण पुलिस ने घर की कुर्क़ करने नोटिस चिपका दिए। तब पिताजी जिला कलक्टर के समक्ष पेश हुए और उन्हें मीसा मेन्टीनेन्स आफ सिक्योरिटि एक्ट में गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। 20 माह तक जेलों में हमें यातनाएं दी जाती रही।

बोहरा ने बताया आपातकाल लागू होने के विरोध में हुए देशव्यापी सत्याग्रह के तहत जोधपुर में कुल 33 लोगों को गिरफ्तार किया गया था। इनमें राजेन्द्र गहलोत, रामनारायण विश्नोई, कर्नल मेघसिंह, रेवाचंद, दामोदर बंग, प्रो. शारदा शरणसिंह, आचार्य गिर्राजकिशोर, गुमानमल लोढ़ा, विज्ञान मोदी, ब्रह्मदेव बोड़ा, देवराज बोहरा, मोहम्मद अली, कांतिलाल जसमतिया, रणछोड़दास गट्टानी, कानराज मोहनोत आदि भी शामिल थे। आपातकाल हटाने के बाद जोधपुर जेल में बंद मीसा बंदियों को रिहा किया गया। बोहरा ने बताया कि आपातकाल के कालखंड को याद करके आज भी दिल दहल जाता है।

लोकतंत्र सेनानी कानराज मोहनोत ने अपनी व्यथा प्रकट करते बताया कि आपातकाल लागू होने की रात्रि के समय पकड़कर मुझे और मेरे भाई मानराज को जेल में डाल दिया गया। जेल में रहने के दौरान मेरी बहन की शादी थी तो जेल की दीवार फांद कर फरार होने में कामयाब रहा। बहन की शादी में बीरा सेवरा देने पहुंचना आवश्यक था। हालांकि विवाह पूर्ण होने के बाद जैसे-तैसे फिर से जेल में प्रवेश होने में भी सफल रहा। जैन चातुर्मास होने के कारण पयुर्षण पर्व रहने पर उपवास भी किए।

लोकतंत्र सैनानी जुगत तापड़िया ने बताया आपातकाल के समय मेरी उम्र मात्र सोलह वर्ष ही थी। मुझे अगस्त में मीसा एक्ट के तहत गिरफ्तार लिया गया था। जोधपुर में जेल में करीब 18 माह तक मुझे प्रो. शारदा शरणसिंह, प्रो. केदार, हीराचंद बोहरा, राजेन्द्र गहलोत, हीराचंद बोहरा, शंकरराज लोढ़ा, पूर्व मुख्यमंत्री हरिशंकर भाभड़ा सहित कई दिग्गज लोगों के साथ रहने का सौभाग्य मिला।

–मिश्रीलाल पंवार, जोधपुर

लू लगना (हीट वेव या सन स्ट्रोक), बचाव, उपाय, रोकथाम व चिकित्सा

प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना

जैसा कि वर्तमान में सर्व विदित है कि आजकल राजस्थान व पूरे देश-विदेश में गर्मी व सूर्य देव का प्रचंड प्रहार जनता झेल रही है, त्रस्त है व लू का प्रकोप, असर ठंडे व पहाड़ी क्षेत्र में भी अच्छी तरह यत्र-तत्र व सर्वत्र परिलक्षित हो रहा है।

स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर, जयपुर में वरिष्ठ होम्योपैथ व आचार्य, प्रोफेसर डॉ. राजीव सक्सेना ने लू लगने के कारण, निवारण, उपाय, बचाव तथा रोकथाम आदि के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की।

कारण व लक्षण :- शरीर में पानी की कमी होना या अत्यधिक गर्मी से निर्जलीकरण होने लग जाता है जो शरीर के आंतरिक अंगो को भी प्रभावित करता है, पसीना आना पूर्णतया बंद हो जाता है। वातावरण में आजकल गर्मी व सूर्य का तापमान 43 से 47 डिग्री सेल्सियस के आसपास व इसके उपर चल रहा है। फलस्वरूप शरीर में बांयटे आने लगते हैं, पेट में एंठन, उलटी - दस्त, सिर दर्द व बदन गर्म होना, काफी तेज ज्वर, पूरे शरीर में दर्द, चेहरे का लाल होना, रेशेज उत्पन्न होना, शरीर में भयंकर कमजोरी आना तथा पिड़ित रोगी बेहोशी की हालत में लसत-पस्त हो सकता है। इसमें शरीर का इम्यून तन्त्र बिगड़ जाता है व शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है व मरीज की मृत्यु तक हो सकती है।

बचाव, उपाय व रोकथाम :- यथा संभव तेज धूप में ना निकलें व जाना जरूरी हो तो बदन को पूर्णतया सफेद, पीले या हल्के रंग के वस्त्रों से ढककर निकलें। छाता लेकर चलें। तेल, घी, चिकनाई युक्त भोजन, तला भुना व चटपटा व खट्टा खाने से बचें। बाजार की वातावरण में खुली चीजें नहीं खायें। छोटे बच्चे, वृद्ध, रक्तचाप व शर्करा रोगियों को अपना विशेष ध्यान रखना चाहिए। थोड़ी - 2 देर बाद भरपूर मात्रा में सादा या मटकी का पानी पियें ना कि फ्रिज का। छाछ, केरी का पना, नमक चीनी का घोल, सत्तू, नमकीन शिकंजी, नारियल का पानी, बील का शर्बत, ठंडाई दही, छाछ व ग्लूकोज़ आदि का सेवन करें। खाली पेट घर से नहीं निकलें। सवेरे - 2, हल्का व्यायाम व योग करें। उचित हल्का व मोटा अनाज खाने में लाएं जैसे खिचड़ी, दलिया, मूंग की दाल व रागी आदि का सेवन करें।

इलाज :- लू के रोगी को तुरंत ठंडी जगह पर लाएं, वस्त्र ढीले करें, शरीर पर तुरंत ठंडी पट्टियां रखें, ठंडी हवा, कूलर, पंखे ए. सी. आदि उपलब्ध करवायें। मरीज को आराम नहीं आता है तो तुरंत पास के योग्य चिकित्सक या अस्पताल में ले जाएं।

होम्योपैथिक चिकित्सा/इलाज :- होम्योपैथिक में कयी दवाइयां हैं जो रोगी को लक्षणों के आधार पर दी जाती हैं, जैसे :-बेलेडोना, ग्लोनाइन, नेटरम कार्ब, फेरम फॉस, वेरेटरम विरिड, स्ट्रामोनियम, फाइव फॉस, नक्स वोमिका व ऑपियम आदि - आदि। मगर इनको सुयोग्य चिकित्सक की देख रेख में ही लेना चाहिए क्योंकि दवा की शक्ति, उसका प्रयोग व बारंबार डॉज लेने के बारे में उचित व पंजीकृत, योग्य होम्योपैथिक चिकित्सक ही सही - 2 बता पाएगा।

–प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना,
वरिष्ठ होम्योपैथ व आचार्य,
स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर, जयपुर

"तरू अजमेर" से होगी पौधारोपण की मॉनिटरिंग

कलेक्टर डॉ. भारती दीक्षित ने "तरू अजमेर पोर्टल" का शुभारम्भ किया

अजमेर, (कासं)। जिला प्रशासन द्वारा मानसून के दौरान विकसित विभिन्न पौधारोपण स्थलों की मॉनिटरिंग के लिए तरू अजमेर पोर्टल का नवाचार किया है। इसका शुभारम्भ सोमवार को जिला कलैक्टर डॉ. भारती दीक्षित ने किया।

जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अभिषेक खन्ना ने बताया कि अजमेर की हरितिमा में वृद्धि के लिए जनभागीदारी के साथ जिला प्रशासन द्वारा मानसून के दौरान बड़े स्तर पर लगभग 10 लाख पौधों का पौधारोपण किया जाएगा। इस दौरान विकसित पौधारोपण स्थलों की जीयोटेगिंग के साथ मॉनिटरिंग करने के लिए नवाचार किया गया है। प्रशासन ने तरू अजमेर पोर्टल तैयार किया है।

इसका शुभारम्भ जिला कलेक्टर डॉ. भारती दीक्षित द्वारा किया गया है। तरू पेड़ का पर्यायवाची शब्द है। तरू (ट्री एक्रॉस रूरल एण्ड अर्बन) अजमेर जिले की समस्त प्लांटेसन साईट की मोनिटरिंग करेगा।

उन्होंने बताया कि इसका उद्देश्य ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सघन वृक्षारोपण कर अजमेर जिले के हरित आवरण को बढ़ाना है। अजमेर जिले के सभी अधिकारियों, उद्योगपतियों, व्यापारियों, कर्मचारियों, नागरिकों, विद्यार्थियों एवं अन्य सभी से जल और वृक्ष की महत्ता को जानना चाहिए। जल संरक्षण करते हुए पौधों को पालने का संकल्प लें, ताकि वे बड़े वृक्षों में बदल जाए।

उन्होंने बताया कि पेड़ हमारे जीवन का आधार हैं। वे न केवल ऑक्सीजन का स्रोत हैं, बल्कि हमारे वातावरण को स्वच्छ और स्वस्थ बनाते हैं। जिला परिषद, अजमेर से जुड़े सभी जनप्रतिनिधि सरपंच, वार्ड पंच एवं सभी आमजन वृक्षारोपण में अजमेर को एक नई पहचान देंगे।

■ जिला प्रशासन द्वारा मानसून के दौरान विकसित विभिन्न पौधारोपण स्थलों की मॉनिटरिंग के लिए तरू अजमेर पोर्टल का नवाचार किया गया है

इस पोर्टल से सभी सरकारी विभाग प्राइवेट एनजीओ एवं आम नागरिक भी स्वयं पंजीकरण करके वृक्षारोपण की अपनी साइट चुन सकते हैं और फोटो अपलोड कर सकते है। पोर्टल पर जिले की नर्सरियों तथा वहां उपलब्ध पौधों की किस्म और संख्या के साथ-साथ उनकी कीमत की जानकारी भी उपलब्ध रहेगी। उन्होंने बताया कि पोर्टल को निर्मित करने में राजकीय अभियंत्रिक महाविद्यालय के सहायक आचार्य सत्यनारायण ताजी के साथ छात्र जातिन सोनी, धर्मवीर तुनवाल व हर्ष पांडे का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है।

उन्होंने बताया कि इस पोर्टल से सभी सरकारी विभाग, प्राइवेट संस्थान, एनजीओ, उद्यमी, एसोशिएशन एवं आम नागरिक भी स्वयं पंजीकरण करके अपनी पौधारोपण साइट चुन सकते हैं और फोटो अपलोड कर सकते है। जिले के समस्त राजकीय कार्यालयों के लिए लक्ष्य निर्धारित किया गया है। ग्राम स्तर तक के कार्यालयों एवं संस्थानों के द्वारा विकसित की गई पौधारोपण साईट की मोनिटरिंग होगी। ग्राम पंचायत, विद्यालय से लेकर बडे कार्यालयों द्वारा पौधारोपण किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि पोर्टल पर कोई भी व्यक्ति अपने नाम एवं मोबाईल नम्बर के साथ पंजीयन कर सकता है। पंजीयन के समय व्यक्ति को अपना यूजर आईडी एवं पासवर्ड स्वयं अपनी सुविधा के अनुसार फीड करना होगा। इसमें व्यक्ति अपने अथवा समूह द्वारा विकसित पौधारोपण साइट की जानकारी अपलोड कर सकता है। नर्सरी की लोकेशन भी डाली जाएगी। सीएसआर के माध्यम से सहयोग करने वाले व्यक्ति एवं संस्थाएं भी अपना पंजीयन करवा सकते है। जनभागीदारी एवं सीएसआर के लिए जिला कलक्टर डॉ. भारती दीक्षित द्वारा बैठक भी ली गई।

राशिफल मंगलवार 25 जून, 2024

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, चतुरथी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, श्रवण नक्षत्र दिन 2:33 तक, वैधृति योग प्रातः 9:05 तक, बव करण दिन 12:18 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 1:49 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-वृष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज बुध उदय पश्चिम में रात्रि 4:11 पर होगा। आज अंगारक चतुरथी व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 10:31 पर होगा। आज वैधृति पुण्य है। पंचक रात्रि 1:49 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:03 से 10:46 तक, लाभ-अमृत 10:46 से 2:12 तक, शुभ 3:54 से 5:37 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:20

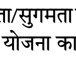

मेष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

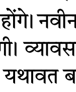

वृष

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

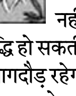

मिथुन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यावसायिक खर्चों में वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

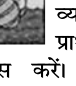

कर्क

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

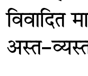

सिंह

नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

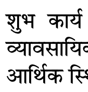

कन्या

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

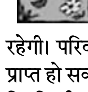

तुला

पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

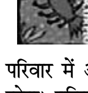

वृश्चिक

परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

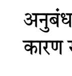

धनु

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। नवीन व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

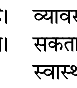

मकर

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक विवादों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

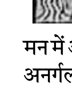

कुंभ

स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। मन में असंतोष और भय बना रहेगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

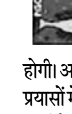

मीन

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।